Toppersnotes®
Unleash the topper in you

BPSC

TRE 4.0

इतिहास भाषा शिक्षक (कक्षा 11-12)

(इतिहास विषय शिक्षक)

भाग - 2

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	ईटें मनके तथा अस्थियाँ हड़प्पा सभ्यता	1
2.	उपनिवेशवाद और देहात	12
3.	यात्रियों के नजरिए	20
4.	लेखन कला और शहरी जीवन	26
5.	समय की शुरुआत से	30
6.	तीन महाद्वीपों में फैला हुआ साम्राज्य	34
7.	भक्ति - सूफी पंरपराएँ	37
8.	राजा किसान और नगर आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ	45
9.	विद्रोही और राज	55
10.	एक साम्राज्य की राजधानी विजयनगर	60
11.	औपनिवेशिक शहर	67
12.	बंधुत्व जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज (600 ईपू से 600 ईसवी)	74
13.	महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन	80
14.	यायावर साम्राज्य	88
15.	इस्लाम का उदय और विस्तार	92
16.	किसान जमींदार और राज्य	97
17.	तीन वर्ग	102
18.	विचारक, विश्वास और इमारतें	106
19.	संविधान का निर्माण	114
20.	बदलती हुई सांस्कृतिक परम्पराएँ	120
21.	विभाजन को समझना	124
22.	शासक और विभिन्न इतिवृत्त	130
23.	मूल निवासियों का विस्थापन	136
24.	आधुनिकीकरण के रास्ते	139
25.	संस्कृतियों का टकराव	143
26.	औद्योगिक क्रांति	146

1 CHAPTER

ईंटें मनके तथा अस्थियाँ हड़प्पा सभ्यता

संस्कृति शब्द का अर्थ :-

पुरातत्वविद ' संस्कृति ' शब्द का प्रयोग पुरावस्तुओं के ऐसे समूह के लिए करते हैं जो एक विशिष्ट शैली के होते हैं और सामान्यतया एक साथ, एक विशेष काल – खंड तथा भौगोलिक क्षेत्र से संबद्ध में पाए जाते हैं।

हड़प्पा सभ्यता / सिंधु घाटी सभ्यता :-

- प्राचीन भारत की पहली सभ्यता हड़प्पा सभ्यता है। यह संस्कृति पहली बार हड़प्पा नामक स्थान पर खोजी गई थी इसलिए उसी के नाम पर इस संस्कृति का नाम रखा गया है। हड़प्पा पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में मोंटगोमरी जिले की रावी नदी के बाएं तट पर स्थित है। लगभग 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच इसका काल निर्धरण किया गया है। इस सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है।
- इस सभ्यता का विस्तार प्रारंभ में 12 लाख 99 हजार 600 वर्ग K.M निर्धारित किया गया था। जो अब 15 – 20 लाख वर्ग K.M के आस – पास संभावित है। सिंधु सभ्यता के लिए सुझाया गया नाम सिंधु सरस्वति संस्कृति एवं सिंधु सभ्यता का उपयुक्त नाम हडप्पा सभय्ता है।
- सिंधु सभ्यता मे महादेवन एवं विश्वनाथ द्वारा किए गए शोध के आधार पर 2467 अभिलेख/ अभिलिखित सबूत मिले हैं। जिसकी संख्या अब 3000 के आसपास हो गई है।

हड़प्पा संस्कृति काल / सिंधु घाटी सभ्यता :-

2600 से 1900 ईसा पूर्व

हड़प्पा संस्कृति के भाग / चरण :

- आरंभिक हड़प्पा संस्कृति
- विकसित हड़प्पा संस्कृति
- परवर्ती हड़प्पा संस्कृति
- B . C . (Before Christ) – ईसा पूर्व
- A . D (Ano Dominy) – ईसा मसीह के जन्म वर्ष
- B . P (Before Present) – आज से पहले

हड़प्पा सभ्यता की खोज :-

नोट :- हड़प्पा सभ्यता की खोज 1921-22 में दया राम साहनी, रखालदास बनर्जी और सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में हुई।

- 1856 में जब कराची और लाहौर के बीच पहली बार रेलवे लाइन का निर्माण किया जा रहा था तो उत्खनन कार्य के दौरान अचानक हड़प्पा पुरास्थल मिला। यह स्थान आधुनिक समय में पाकिस्तान में है। उन कर्मचारियों ने इसे खंडहर समझ लिया और यहां की हजारों ईंट उखाड़ कर यहां से ले गए और ईंटों का इस्तेमाल रेलवे लाइन बिछाने में किया गया लेकिन वह यह नहीं जान सके की यहां कोई सभ्यता थी।

- उस समय जॉन व्रटन और विलियम व्रटन दोनो ने एक महत्वपूर्ण सभ्यता होने का संकेत दिया लेकिन फिर भी कोई उत्खनन नही किया गया।
- 1920 – 21 में माधोस्वरूप वत्स व दयाराम साहनी के द्वारा पहली बार हड़प्पा का उत्खनन किया गया।
- 1922 में रखाल दास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो नामक स्थान का उत्खनन किया जो पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र में लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाएं तट पर स्थित है। रखाल दास बनर्जी इस टीले के ऊपर स्थित कुषाण युगीन, बौद्ध स्तुप का उत्खनन कर रहे थे।

नोट :- मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ :-

i) मृतको का टीला ii) मुर्दो का टीला

iii) प्रेतो का टीला iv) सिंध का बाग

v) सिंध ना नक्लस्थान।

इन दोनों उत्खनन के बाद सन् 1924 में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल सर जॉन मार्शल ने पूरे विश्व के सामने एक नई सभ्यता की खोज की घोषणा की। सर जॉन मार्शल ने लंदन वीकली नामक पत्रिका में इसे सिंधु सभ्यता नाम दिया।

हड़प्पा सभ्यता को सिन्धुघाटी सभ्यता क्यों कहा जाता है ?

इस सभ्यता को सिन्धुघाटी सभ्यता इसलिए कहा जाता है क्योकि यह सभ्यता सिन्धु नदी घाटी के आसपास फैली हुई थी। यह इलाका उपजाऊ था, हड़प्यावासी यहाँ पर खेती किया करते थे।

सिंधु सभ्यता की लिपि :-

- सिंधु लिपि को पढ़ने का प्रथम प्रयास 1925 में वेंडेल ने तथा नवीतम प्रयास नटवर झा, घनपत सिंह धान्या, राजाराम ने की थी। लेकिन अभी तक भी सिंधु लिपि को प्रमाणित रूप से पढ़ा नही जा सकता है।
- लिपि के सबसे ज्यादा अक्षर मोहनजोदड़ो से तथा दूसरे नंबर पर हड़प्पा से मिले हैं। लिपि के सबसे बड़े अक्षर धोलावीरा से मिले हैं। जिन्हें Notice Board का प्रतीक माना गया है।
- सिंधु लिपि भावचित्रात्मक है। अर्थात चित्रो के माध्यम से भावो को अभिव्यक्त करना। सिंधु लिपि दोनो ओर से लिखी जाती है इसलिए इसे बुस्ट्रोफेदेन कहा गया है।
- सिंधु सभ्यता के विभिन्न पक्षो को जानने की दृष्टि से विशेष उलेखनीय है : सेलखड़ी प्रस्तर एवं पक्की मिट्टी से निर्मित विभिन्न आकर और प्रकार की मोहरे जिनमे आयताकार और वर्गाकार प्रमुख हैं।
- आयताकार पर केवल लेख मिलते है जबकि वर्गाकार पर लेख और चित्र दोनो मिलते है। मेसोपोटामिया की 5 बेलनाकार मोहरे मोहनजोदड़ो से मिली है तथा फारस की बनी हुई संगमरमर की मोहरे लोथल से मिली है।

सिंधु सभ्यता के निर्माता :-

सिंधु सभ्यता के अंतर्गत उत्खनन में मुख्य 4 प्रकार के अस्ति पंजर मिले हैं

- प्रोटो – आस्ट्रोलॉयड
- अल्पाइन
- भूमध्य सागरीय
- मंगोलियन

इसके आधार पर यह सम्भावना स्वीकार की गई है। इसके निर्माण मे मित्रित प्रजातियों के लोगों का स्थान था वैसे तो इनका संस्थापक द्रविडा को माना गया है। जो बाद में दक्षिण भारत में पलायन कर गये।

सिंधु सभ्यता की प्रमुख विशेषता :-

कास्य युगीन सभ्यता थी।

- भारतीय इतिहास में प्रथम नगरीय क्रंति का प्रतीक जिसकी पुष्टि उत्खनन से प्राप्त कई महत्वपूर्ण नगरो के अवशेषो से होती है।
- ➢ व्यापार व वाणिज्य गतिविधियों में महत्व।
- जीवन के प्रति शांतिवादी दृष्टिकोण (उत्खनन में न तो हथियार, औजार न ही रक्षात्मक हथियार जैसे ढाल, कवच आदि।)
- जीवन के प्रति समिष्टवादी दृष्टिकोण (इसकी पुष्टि मोहनजोदड़ो के विशाल स्नानागार, धोलावीरा एवं जूनीकरण से प्राप्त स्टेडियम, जूनिकरण एव मोहनजोदड़ो से प्राप्त सभा भवन)
- सैन्धव वासी लोग लोहे से परिचित नही थे उलेखनीय है कि लोहे का प्रचीनतम साक्ष्य/सबूत उत्तर प्रदेश के ऐटा जिला अतरंजीखेड़ा से मिला है। जिसका समय 1050 ई० पु० के आस – पास स्वीकार किया गया है।
- सिंधु वासी लोग पीतल से भी परिचित नही थे।

हड़प्पा सभ्यता की जानकारी के प्रमुख स्रोत :-

- आवास
- मृदभांड
- आभूषण
- औजार और
- मुहरें
- इमारतें और खुदाई से मिले सिक्के।

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल :-

- हड़प्पा सभ्यता के कुछ स्थल वर्तमान में पाकिस्तान में है और बाकी स्थल भारत में है :-
  - नागेश्वर (गुजरात)
  - बालाकोट (पाकिस्तान)
  - चन्हुदड़ो (पाकिस्तान)
  - कोटदीजी (पाकिस्तान)
  - धौलावीरा (गुजरात)
  - लोथल (गुजरात)
  - कालीबंगन (राजस्थान)
  - बनावली (हरियाणा)
  - राखीगढ़ी (हरियाणा)

हड़प्पा सभ्यता में नगर नियोजन तथा वास्तुकला

- नगर योजना
- भवन निर्माण
- सार्वजनिक भवन
- विशाल स्नानघर
- अन्न भंडार
- जल निकास प्रणाली

हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना (बस्तियाँ) :-

हड़प्पा सभ्यता की बस्तियाँ दो भागों में विभाजित थी

- **दुर्ग :-**
  - ये कच्ची इंटों की चबूतरे पर बनी होती थी
  - दुर्ग को दीवारों से घेरा गया था
  - दुर्ग पर बनी संरचनाओं का प्रयोग संभवत: विशिष्ट सार्वजानिक प्रयोग के लिए किया जाता था।
- **निचला शहर :-** निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रस्तुत करता है। निचला शहर भी दीवार से घेरा गया था। इसके अतिरिक्त कई भवनों को ऊँचे चबूतरों पर बनाया गया था जो नींव का कार्य करते थे।

हड़प्पा सभ्यता की सडकों और गलियों की विशेषताएँ :-

- समकोण पर एक – दूसरे को काटती हुई सीधी सड़के जिसके कारण पूरा नगर क्षेत्र विभिन्न आयातकार एव खण्डों मे विभक्त हो गया है। जिसे जाल पद्धति, ऑक्सफोर्ट पद्धति, चैस बोर्ड पद्धति कहते हैं।
- सड़को का निर्माण मिट्टी से किया जाता था।
- नोट :- बनावली में सड़कों पर गाड़ी के पहियो के निशान मिले हैं।एवं सड़क को पक्की करने के प्रयास के भी साक्ष्य कालीबंगा से मिले हैं।
- सड़क के किनारे – किनारे पानी निकासी के लिए नालियाँ बनी होती थी / नालियो को ढकने की व्यवस्या होती थी। नालियो को फर्श से ढका जाता था। नालियो मे थोड़ी दूर पर शोषक कूप होता या जिनमे गंदगी रुकती थी। पक्की ईटो का प्रयोग बहुत अधिक मात्रा मे किया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता में भवन निर्माण :-

- हड़प्पा सभ्यता में माकानो की योजना आगन पर आधारित थी। जिसमें शौचालय, स्नानागार, रसोईघर, सयनकक्ष आदि के अतरिक्त अन्य कमरे भी मिले है।
- मजबूती के लिये नीव नर्माण की जाती थी। सड़को के किनारे माकान बने थे जिनसे सुविधा हवा, सफाई, प्रकाश की पूर्ण व्यवस्या होती थी।
- मकान जमीन से ऊँचाई पर बनाये जाते थे। मकानों के दरवाजे सड़को की ओर खुले रहते थे। मकानों के प्रवेश द्वार मुख्य मार्ग की आपेक्षा गली की ओर खुले थे। जिसके कारण बाहरी हलचल, शोरगुल एवं प्रदूषण से सुरक्षित रह होगा।
- सड़को के किनारे – किनारे पानी की निकासी के लिए नालियाँ बनी होती थी। नालियो को ढकने की व्यवस्था होती थी।
- नालियो को फर्श से ढखा जाता था। नालियो में थोड़ी – थोड़ी दूर पर शोषक कूप लगे रहते थे। जिनमें गंदगी रुकी रहती थी। पक्की ईटो का प्रयोग बहुत अधिक मात्रा में किया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता में सार्वजनिक भवन :-

- सिंधु घाटी सभ्यता को दो भागों में विभाजित किया गया। जिसके ऊपरी हिस्से में सार्वजनिक भवन व निचले हिस्से में व्यक्तिगत आवास बने हुए थे।
- उत्खनन में सावर्जनिक या राज्यकीय भवनों के अवशेष मिले हैं। एक अवशेष मोहनजोदड़ो से मिला है। जो 70 मीटर लम्बा और 24 मीटर चौडा है। यह इस्मार्क उस काल की संपन्नता का परिच्यक है। यहाँ पर ही 71 मीटर लंबा व इतना ही चौड़ा एक वर्गाकार कक्ष का अवशेष प्राप्त हुआ है। जिसमे 20 सतम्भ है।
- एक अनुमान के अनुसार इस भवन का उपयोग आपसी विचार विमर्श धार्मिक आयोजन, सामाजिक आयोजन के लिए किया जाता होगा।

हड़प्पा सभ्यता में विशाल स्नानागार :-

- स्नानागार का जलाशय किले में स्थित था। 11.88 मीटर लंबा 7.01 मीटर चौड़ा 2.43 मीटर गेहरा इसके तल पर सीढ़िया बनी हुई है। यह सीडिया पक्की ईटो से बनाई गई है
- स्नान कुड़ के चारो और कमरे बने हुए है और बराऊनदे भी बनाये गए है। स्नान कुंड के कमरे के समीप एक कुआ बना हुआ है। जिससे पानी कुंड में आता था और कुंड के गन्दे पानी की निकासी एक अन्य दरवाजे (द्वार) से की जाती थी। गंदा पानी फिर बड़ी नालियो के माध्यम से शहर से बाहर निकल जाता।
- स्नानागार की दीवारों के निर्माण में सीलन से बचने के लिए डावर या तारकोल का प्रयोग किया जाता था। पूरे स्नानागार में 6 प्रवेश द्वार होते थे। स्नानागार में गर्म पानी की व्यवस्था भी होती थी।
- नोट :- इस स्नानागार के बारे में अमेस्ट मैके कहते हैं कि यह स्नानागार प्रोहित के स्नान के लिये होता था।

अन्न भण्डार :-

हड़प्पा नगर के उत्खनन में यहाँ के किले के राजमार्ग मे 6-6 पक्तियो वाले अन्न भण्डार मिले है। अन्न भण्डार की लंबाई 18 मीटर चौड़ाई + 7 मीटर लम्बाई (18 x 7) इसका मुख्य द्वार नदी की और खुलता या क्योकि जो भी सामान जल मार्ग से आता था आन्न भण्डार मे एकत्रित किया जाता था।

हड़प्पा सभ्यता में जल निकास प्रणाली :-

हड़प्पा संस्कृति नगरीय थी। इन लोगो का जीवन स्तर उच्च था। घरो का गंदा पानी सड़को के किनारे बनी हुई नालियो से लेकर शहर के बाहर हो जाता था। इन नालियो में पक्की ईटो का प्रयोग किया जाता था। इनका पिलास्टर किया जाता था। जिससे नालियो को कोई नुकसान न पहुंचे इसलिए पिलास्टर के लिए चुना, मिट्टी, जिप्सम का प्रयोग किया जाता था।

- नोट :- प्रोफेसर रामचरण शर्मा की मान्यता है कि कंश युग की किसी भी दूसरी सभ्यता ने सफाई व स्वास्थ को इतना महत्व नही दिया जितना हडप्पा देश के वासियो ने दिया।
- नोट :- बहुतायत से पक्की ईटो का प्रयोग मुख्य रूप से चार प्रकार की ईटे प्रयुक्त की जाती थी।
- आयताकार = 4:2:1
- L एल प्रकार की ईटे = इन ईटो का प्रयोग कोने में किया जाता था।
- नोकदार ईटे = इनका प्रयोग कुओ में किया जाता है।
- T टी प्रकार की ईटो = इनका प्रयोग सीढ़ियों में किया जाता था।
- अलकृत ईटो से निर्मित फर्श कालीबंगा से मिला है।
- ईटो पर बिल्ली का पीछा करते हुए कुत्ते के पंजे का निशान मिला है। यह चन्हूदड़ों सभ्यता से मिला है।

हड़प्पा सभ्यता में सामाजिक जीवन

- सामाजिक संगठन
- भोजन
- वस्त्र
- आभूषण व सौंदर्य प्रर्दशन
- मनोरजन
- प्रौद्योगिकी
- मृतक कर्म
- चिकित्सा विज्ञान

हड़प्पा सभ्यता में सामाजिक सगठन :-

- इतिहासकार गार्नर चाइल्ड ने समाज को चार भागों में विभाजित किया है :-
- शिक्षित वर्ग :- प्रोहित, चिकित्सा, जादूगर, जोतिस
- योद्धा / सैनिक :- इनकी पुष्टि दुर्गों में उपस्थिति के अवशेषों से मिले है।
- व्यपारि व दस्तक्षार :- बुनकर, कुमार, सुवर्णकर
- श्रमिक एवं कृषक :- टोकरी बनाने वाले, मछली मारने वाले

हड़प्पा सभ्यता में भोजन :-

- गेहूँ, चावल, जौ, तेल, मटर, सब्जियां वह मासाहारी भी थे। कछुआ, गड़ियाल, भेड़, बकरी, सुअर व मछली का माँस इत्यादि खाते थे।
- इस काल मे चित्रो में खजूर, अनार, तरबूज, नींबू, नारियल आदि के फलों का चित्रण किया जाता था। वह इन फ़लो का उपयोग भोजन के रूप में करते थे
- इस प्रकार हड़प्पा वासी माँसाहारी व शाकाहारी दोनों ही थे।

हड़प्पा सभ्यता में वस्त्र :-

- वह भिन्नन – भिन्नन ऋतुओ में अलग – अलग वस्त्र पहनते थे। महिला और पुरुष के वस्त्रों में भिन्नता पाई जाती थी।
- पुरुषो में धोती, पगड़ी, दशाले (कुर्ता), एव महिलाओं में घागरा में साड़ी पहनती थी।
- नोट :- चन्हूदड़ों से प्राप्त मूर्ति में पगड़ी मिली है।

हड़प्पा सभ्यता में आभूषण एव सौंदर्य प्रसाधन :-

स्त्री व पुरुष दोनों ही आभूषण पहनते थे। व दोनों ही सौंदर्य प्रसाधन के सामग्री का प्रयोग करते थे। आँगूठी, कान की बाली, चुडिया, बाजू बंद, हार, धनी लोग हाथो में सोने जैसी कीमती धातू के आभूषण पहनते थे। जबकि सामान्य लोग ताँबे, काँसा तथा हड्ड़ी के बने आभूषण पहनते थे।

हड़प्पा सभ्यता में मनोरंजन :-

- मछली पकड़ना, शिकार करना उनका प्रिय मनोरंजन था। जानवरो की दौड़, जुनझुने, सीटिया तथा शतरंज के खेल उनके मनोरंजन के साधन थे।
- इसके अलावा पत्थर तथा सीप की गोलियों से खेल खेलते थे। खुदाई में पशुओं की मूर्ति, बेल गाड़िया, दो पहिये वाला तांबे का रथ मिला है। नत्यागना कि मूर्ति भी मिली है। जिसमे पता चलता है कि हड़प्पावासी भी नाच – गाना करते थे।

प्रौद्योगिकी :-

वे धातु कर्म का निर्माण करते थे। अयस्कों से धातु अलग करते थे। मिश्रित धातु का भी निर्माण करते थे। ताँवे में चांदी व टिन मिलाकर काँसा बना लेते थे। अश्यक की आपूर्ति राजस्थान प्रान्त के खेड़ी (झुनझुनू) व बिहार प्रान्त के हजारी बाग से करते थे। चकमक पत्थर के बॉट व नालिकाकार बम बनाते थे।

हड़प्पा सभ्यता में म्रतक कर्म (अंत्योष्टि क्रिया) :-

- हड़प्पा कालीन नगरो (मोहनजोदड़ो, बनावली, हडप्पा, कालीबंगा,) आदि में शमसान के अवशेष मिले हैं।
- सर जॉन मार्शल के अनुसार इसे तीन भागो में विभाजित किया है।
- पूर्ण समाधिकरण / शवाधान
- आंशिक समाधिकरण / शवाधान
- दाह कर्म / क्लेश शवाधान

पूर्ण शवाधान :-

- शव को उत्तर से लेकर दक्षिण की ओर दफनाया जाता था।
- नोट :- हडप्पा में एक कब्र ऐसी मिली है जिसे दक्षिण से उत्तर की ओर दफनाया गया है। और सबको दाबूत में रखा गया है। इसकी पहचान विशेष कब्र से की गई हैं।
- नोट :- लोथल में पूर्व से पश्चिम की ओर दफनाने का अवशेष मिला है। तथा शव करवट के रूप में हैं।
- नोट :- लोथल से ही युग्म शव (स्त्री, पुरुष) मिला है। इससे पता चलता है कि उस समय सती प्रथा प्रचलित थी।
- सबसे बड़ा कबरिस्तान हडप्पा से मिला है जिसे R37 की संज्ञा दी गई है।
- हडप्पा संस्कृति में एक ओर कब्रिस्तान मिला है जिसे H कब्रिस्तान की संज्ञा दी गयी है।

आंशिक शवाधान :-

- शव को पशु – पक्षियों द्वारा खाने के बाद बचे हुए अवशेषों को दफना देना।

क्लेश शवाधान / दाह कर्म :-

- दाह के पश्चात बचे हुए अवशेष को किसी कलश या मंजूषा (बर्तन) में रखकर दफना देना।

हड़प्पा सभ्यता में चिकित्सा विज्ञान :-

- जड़ी – बूटी, फल, वृक्षों के पत्ते, विशिष्ट प्रजाति के वृक्षों के फूल, रस का सेवन करते थे। हिरणो के सींगो से चूर्ण बनाया जाता था। समुद्र के फेन (झांग) से भी औषधि बनाई जाती थी। शिलाजीत भी पाई जाती थी।

हड़प्पा सभ्यता में आर्थिक जीवन

- कृषि
- व्यपार
- माप तोल के बाट
- पशु – पालन
- कुटीर उद्योग

कृषि :-

- जौ, गेहूँ, मटर, खजूर,कपास, तरबूज, तिल, राई, सरसो जैसे फसले उगाई जाती थी। इनका उत्पादन फावड़े से तो नही मिला। लेकिन हल के अवशेष कालीबंगा से मिले हैं। फसल को पाषण के काटने के लिये हासिये का प्रयोग किया जाता था।
- आनाज को धोने के लिए दो पाहिये वाली गाड़ी का प्रयोग किया जाता था। बैल सिंधु सभ्यता का सबसे प्रमुख पशु था।

पशु – पालन :-

बकरी, भेड़, सुअर, भैस, बैल, पालते थे बैल के रूप में सांड प्रमुख पशु था। इसके अतिरिक्त हाथी ओर पाले जाते थे। किंतु घोड़े से वो परिचित नही थे। वे कुत्तो और बिल्ली पालते थे। साथ ही तोता, मयूर मूंगे, भालू, चीता, खरगोश, बत्तख, हिरण आदि के चित्र उनकी मूर्तियों के चित्रों में अंकित है। परंतु अवशेष नही है।

व्यपार :-

- हड़प्पा के लोग व्यपार को अधिक महत्व देते थे।
- नाप के लिए शीशे की पटरी का प्रयोग करते थे।
- चन्हुदड़ो में उत्खनन से प्राप्त पत्थरों के एक वाट का प्रयोग कारखाना मिला है।
- समाज मे अनेक व्यापारिक वर्गों के लिए रहते थे। जिनका कार्य केवल व्यपार या व्यवसाय से होता था। इनमे कुमार, बढई, सुनार आदि प्रमुख थे।
- आर्थिक व्यपार के अतरिक्त इनका ईरान, अफगानिस्तान, मेसोपोटामिया, इराक के साथ व्यपारिक सम्बंध थे।
- अतरिक्त व्यपार वस्तु विलियम के माध्यम से जिनकी बाहरी व्यपार मोहरो से किया जाता था। दूर देशो में जहाज रानी का प्रयोग किया करते थे।

कुटीर उद्योग :-

- कुमारो के द्वारा चाक से निर्मित मिट्टी की मूर्तियां, खिलोने, बर्तन के अतिरिक्त ईटो का निर्माण भी बड़े पैमाने पर किया जाता था।
- इस काल मे हाथी दाँत, सीपियों धातु के विभिन्न आभूषण बनाये जाते।

माप तोल वाट :-

तोल के लिए तराज़ू व वाट सम्मिलित थे। चिकने पत्थर से वाट का निर्माण किया जाता था (चर्ट) नामक पत्थर से वाट का निर्माण किया जाता था। सबसे बड़े वाट का वजन 375 ग्राम था सबसे छोटे का वजन 0.87 ग्राम था।

हड़प्पा सभ्यता में धार्मिक जीवन

- मात्र देवी की उपासना।
- वृक्ष ओर पशु पूजा।
- शिव या परम पुरुष की आराधना।
- लिंग पूजा।

मात्र देवी की पूजा या उपासना :-

- हड़प्पा संस्कृति में मन्दिरो का अभाव था। उत्खनन में ऐसा कोई भवन प्राप्त नही हुआ जिसे देवालय की संज्ञा दी जा सके। इस काल मे मिट्टी तथा धातु की अनेक नग्न नारी की मूर्तियां मिली है।
- मात्र देवी के अनेक चित्र ताबीजों में मिट्टी के बर्तनों में तथा मोहरो में अंकित है। इसमें यह पता चलता है कि यहाँ पर मात्र देवी की उपासना की जाती है।
- नोट :- प्रो आर एस त्रिपाठी की मान्यता है कि पूजा के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिष्ठा मात्र शक्ति की थी। जिसकी अराजना प्रचीन काल से ईरान से लेकर इंजियन सागर तक के सारे देश मे होते थे।
- मात्र देवी श्रिष्टि की उत्पत्ति व वनस्पति के फैलाव में देवी का योगदान स्वीकार किया गया है।
- इस समय मात्र देवी को प्रसनन करने के लिए बलि प्रथा का प्रचलन था। पूजा, आराधना, नृत्य, संगीत बली देकर की जाती थी। इस काल मे मन्दिरो के अवशेष नही मिले हैं।

शिव या परम – पुरुष की उपासना :-

उत्खनन में अर्नेष्ट मैके को एक ऐसी मुद्रा मिली जिस पर पुरुष के चित्र में शिर के दोनों और सींघ है। इस योगी के तीन मुख है। सांत व गम्भीर मुद्रा में है। इसके वायी ओर जंगली भैसा और गेड़ा जबकि दायीं ओर शेर ओर हाथी है। सामने हिरण है इस ध्यानमग्न योगी के सिर के ऊपर पाँच शब्द लिखे हुए है। जिन्हें अब तक पढ़ा नही जा सका है। (परम पुरुष के रूप में पशुपति शिव की आराधना)

वृक्ष और पशु पूजा :-

अनेक मोहोरो में पीपल तथा उसकी पत्तियों के चित्रों का अंकन है। जिसमे ऐसा लगता हैं कि वह लोग वृक्ष पूजा के अंतर्गत पीपल की पूजा करते थे वर्तमान में भी पीपल की वृक्ष पूजा की जाती है। इनके अतिरिक्त अनेक मोहोरो पर सांड औऱ बैल चित्रित अंकित है। वर्तमान में शिव भगवान के साथ सांड (नन्दी) की पूजा पूरे भारत वर्ष में कई जाती है।

लिंग पूजा :-

उत्खनन में लिंग पूजा प्रस्तर (पत्थर) के लिंग मिले है इससे अनुमान लगाया जाता है कि लिंग पूजा का प्रचलन हड़प्पा संस्कृति में था। इनमे से कुछ लिंगो के शीर्ष गोल आकृति नोकदार कुछ लिंग एक या दो इंच के कुछ तो चार फीट के भी मिले है। स्वाष्टिक चिन्ह एव क्रास तथा पिलस हड़प्पा काल के पवित्र चिन्ह है। जो आज भी पवित्र माने जाते हैं।

हड़प्पा सभ्यता में राजनीति जीवन :-

1. यहाँ पर रानीतिक जीवन व राजनीतिक व्यवस्था की जानकारी बहुत कम मिलती है। इतिहासकार हनटर की मान्यता है कि मोहनजोदड़ो में शासन व्यवस्था लोकतंत्रात्मक थी वह राजतंत्रात्मक नही थी।
2. इतिहासकार व्हीलर की मान्यता है कि मोहनजोदड़ो का शासन व्यवस्था पुरोहितो व धर्मगुरु के हाथों में थी।
3. वे जनप्रतिनिधियों के माध्यम से शासन करते थे। नगर निर्माण व भवन निर्माण को देखकर ऐसा लगता है की वहाँ पर नगर पालिका रही होगी।

हड़प्पा सभ्यता में कला का विकास :-

- मूर्तिकला
- धातुकला
- वस्त्र निर्माण कला
- चित्रकला
- पात्र निर्माण कला
- नित्य तथा संगीत कला
- मुद्रा कला
- ताम्र निर्माण कला
- लेखन कला

मूर्तिकला :-

- उत्खनन में प्राप्त पत्थर की मूर्तियां कांसे की मूर्तियां इसमे अंगों की छलक दिखाई गई है। एक नृतकी की मूर्ति बहुत ही सुंदर व आकर्षक है इन मूर्तियों में गाल की हड्ड़ी बहुत ही सुंदर व आकर्षक है आँखे तिरछी व पतली है गर्दन छोटी व पतली है।

धातुकला :-

- सोना, चाँदी, ताँबा, आदि के आभूषण मिले हैं।

वस्त्र निर्माण कला :-

- उत्खनन में चरखा मिला है। जिससे पता चलता है की सूत काटने का काम में वहाँ के लोग निपुण थे। सूती, ऊनी, रेशम वस्त्र पहनते थे।

चित्रकला :-

- मोहोरो पर साँड़ के चित्र, भैसे के चित्र, वृक्ष के चित्र इसका मतलब वो लोग चित्रकला में निपुण थे।

पात्र – निर्माण कला :-

- मिट्टी के पात्र बनाने में, पानी भरने के लिए तरह – तरह के घड़े, अनाज रखने के लिए छोटे अनेक प्रकार के भाण्ड, मिट्टी के खिलौने इसका मतलब वो पात्र – निर्माण कला में निपुण थे।

नृत्य तथा संगीत कला :-

- नृत्यांगना की मूर्ति मिली है पात्रो पर तलवे तथा ढोलक के चित्र मिलते हैं।

मुद्रा कला :-

- उत्खनन में भिन्न – भिन्न प्रकार के पत्थरो, धातुओं तथा हाथी दाँत व मिट्टी की 600 मोहरे मिली है। जिन पर एक ओर पशुओं के चित्र ओर दूसरी ओर लेख मिले है।

ताम्र निर्माण कला :-

- उत्खनन में अनेक ताम्र पत्र मिले हैं जो वर्गाकार व आयताकार के है। इनमे पशुओं व मनुष्य के चित्र मिले हैं। पशुओं में बैल, भैसा, गेड़ा, सांड, हाथी, शेर आदि मनुष्य में योगी के चित्र मिले हैं।

लेखन कला :-

- उत्खनन कोई भी लिखित शिलालेख या ताम्रपत्र नही मिला है। लेकिन फिर भी विद्वानों में मतभेद है (लिपि में के बारे में यह लिपि चित्रतात्मक थी। तथा दाये से बाए व बाए से दाये दोनों ओर लिखी जाती थी।

निर्वाह के तरीके (कृषि, शिल्पकला, व्यापार) :-

- गुजरात से बाजरे के दाने मिले हैं। चावल के दाने कम मिले है।
- बनावली (हरियाणा) से मिट्टी के हल के खिलौने मिले हैं।
- कालीबंगा नामक सभ्यता से जूते हुए खेत का साक्ष्य मिला है। इस खेत मे हल रेखाओ के द्वारा एक – दूसरे को समकोण पर काटते हुए दिखाया गया है। इससे यह पता चलता है कि एक साथ दो दो फैसले उगाई जाती थी।
- आधिकांश हड़प्पा स्थल अर्धशुष्क क्षेत्रों में स्थित थे। जहाँ के लिए सिचाई की आवश्यकता पड़ती होगी।
- हड़प्पा वासी कपास का भी प्रयोग करते थे। मोहनजोदड़ो से कपड़ो के टुकड़ों के अवशेष मिले हैं।

विलासिता की खोज :-

- फयान्स (घिसी हुई रेत, अथवा बालू तथा रंग और चिपचिपे पर्दाथ के मिश्रण को पकाकर बनाया गया पदार्थ) के छोटे पात्र सम्भवतः कीमती थे। क्योकि इन्हें बनाना कठिन था।
- सुगंधित प्रदार्थो के रूप में बने लघुपात्र मोहनजोदड़ो ओर हडप्पा से मिले हैं।
- सोना भी दुर्लभ तथा संभवतः आज की तरह कीमती था। हड़प्पा स्थलो से मिले सभी स्वर्णभूषण संचयो से प्राप्त हुए हैं।

मोहरो का आदान – प्रदान :-

- सिंधु सभ्यता की मोहरे उर, सुमेर, क्रिश, उम्मा, तेलुअस्मार, बहरीन, आदि से मिली है।
- मेसोपोटामिया की मोहरे मोहनजोदड़ो तथा फारस की मोहरे लोथल से मिली है। (वस्तु का आदान प्रदान की पुष्टि)
- जॉन मार्शल को मोहनजोदड़ो से एक ऐसी मोहर मिली है जिस पर एक व्यक्ति को बाघ से लड़ते हुए दिखाया गया है।
- जॉन मार्शल के अनुसार यह विचार बेबिलोनिया के महाकव्य गिलगिमेश से लिया गया है।
- लोथल से प्राप्त गोड़ीबाड़ा के अवशेष मोहर पर जहाज का चित्र तथा मिट्टी के जहाज का नाम नमूना था।

मृदभाण्ड :-

- यहा के मृदभाण्ड मुख्यतः गाढी लला चिकनी मिट्टी से निर्मित है। जिन पर काले रंग का चित्रण है। मुख्यत : ज्यामितीय चित्रण
- लोथल से एक ऐसा मृदभाण्ड मिला है जिस पर चित्रित चित्र का समीकरण पंचतंत्र की कहानी चालक लोमड़ी से किया गया है।
- हड़प्पा से प्राप्त एक मृदभाण्ड पर मानव और बच्चे का चित्र मिला है। डिजाइनदार मृदभाण्ड भी मिले हैं। जिसमे अलग – अलग रंगों का भी प्रयोग किया गया है। इनको सजावट के लिए प्रयोग किया जाता था।

कलात्मक अवशेष :-

- हड़प्पा से प्राप्त काले पत्थर से निर्मित नृतक की मूर्ति नटराज नृत्य की मुद्रा में।
- हड़प्पा से भी प्राप्त सिविहिनी मानव की मूर्ति।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त सिरविहिनी मानव मूर्ति।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त कास्य नृतकी।

हड़प्पाई लिपि की विशेषताएँ :-

- यह लिपि दाईं से बाए ओर लिखी जाती थी।
- यह लिपि चित्रात्मक लिपि थी।
- इस लिपि में 375 – 400 चिन्ह थे।
- इस लिपि को आजतक कोई समझ नहीं पाया।
- यह एक रहस्यमई लिपि है।
- इसी के कारण हडप्पा सभ्यता के बारे में हमे ज्यादा जानकारी नही मिल सकी क्योकि हडप्पा की लिपि को आजतक विद्वान् समझ नही पाए।

हडप्पा सभ्यता में शिल्पकला :-

- शिल्प कार्य का अर्थ होता है शिल्प से जुड़े कार्य करना जैसे :-
    - मनके बनाना।
    - शंख की कटाई करना।
    - धातु से जुड़े काम करना।
    - मुहरे बनाना।
    - बाट बनाना।
    - चन्हुदड़ो ऐसी जगह थी जहाँ के लोग लगभग पूरी तरह से शिल्पउत्पादन के कार्य करते थे।
    - चन्हुदड़ो में कुछ ऐसी चीज़े मिली है जिससे पता लगता है की यहाँ पर शिल्प उत्पादन बडे पैमाने पर होता था।
    - हड़प्पाई मोहरे काफी मात्रा में पाई गई है।
    - हड़प्पाई लोग कांसे का प्रयोग करते थे।
    - काँसा तांबा और टिन को मिलाकर बनाई गई एक मिश्रधातु है।

हडप्पा सभ्यता में मनके कैसे बनाए जाते थे ?

- मनके सेलखड़ी नामक पत्थर से बनाये जाते थे।
- मनके कर्निलियन नामक पत्थर से भी बनाये जाते थे।
- मनके जैसपर नमक पत्थर से भी बनाये जाते थे।
- मनके ताबे के भी बनाये जाते थे।
- मनके सोने के भी बनाये जाते थे।
- मनके कांसे के भी बनाये जाते थे।
- इन मनको का प्रयोग मालाओ में किया जाता था तथा यह बहुत सुंदर होते थे।
- मनके हड़प्पा सभ्यता की एक मुख्य सभ्यता है।

कनिंघम :-

- कनिंघम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का पहला डायरेक्टर जनरल था।
- अलेक्जेंडर कनिंघम को भारतीय पुरातत्व का जनक भी कहा जाता है।
- कनिंघम ने 19वीं शताब्दी के मध्य में पुरातात्विक खनन आरंभ किया।
- यह लिखित स्रोतों का प्रयोग अधिक पसंद करते थे।

कनिंघम का भ्रम :-

- कनिंघम ने अपने सर्वेक्षण के दौरान मिले अभिलेखों का संग्रहण पर लेखन तथा अनुवाद भी किया।
- हड़प्पा वस्तुएं 19वीं शताब्दी में कभी कभी मिलती थी और कनिंघम तक पहुंची भी।
- एक अंग्रेज ने कनिंघम को हड़प्पा में पाई गयी एक मुहर दी।
- अलेक्जेंडर कनिंघम को एक अंग्रेज अधिकारी ने जब हड़प्पाई मुहर दिखाई तो कनिंघम यह नहीं समझ पाए कि वह मुहर कितनी पुरानी थी।
- कनिंघम ने उस मुहर को उस कालखंड से जोड़कर बताया जिसके बारे में उन्हें जानकारी थी
- वे उसके महत्व को समझ ही नहीं पाए कि वह मुहर कितनी प्राचीन थी।
- कनिंघम ने यह सोचा कि यह मुहर भारतीय इतिहास का प्रारंभ गंगा घाटी में पनपे पहले शहरों से संबंधित है जबकि यह मुहर गंगा घाटी के शहरों से भी पहले की थी।

हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारण :-

- जल वायु परिवर्तन।
- प्राकृतिक आपदा।
- भूकंप।
- आकाल।
- महामारी।
- बाढो का आना (दामोदर, कोसी, महानदी) बाढ़ की प्रसिद्ध नदी।
- बाहरी आक्रमण (आर्य जाति के आक्रमण).
- वनों की कटाई।
- नदियों का सूखना।
- नदियों का मार्ग बदल जाना।

नोट :- पिंगट एवं व्हीलर आर्य जाति के आक्रमण ऋग्वेद (सबसे प्राचीन वेद) में आर्यो द्वारा हरियूषिया को नष्ट करने का उल्लेख है।

- वैदिक साहित्य में हड़प्पा को हरियूषिया कहा जाता है।
- सर जॉन मार्शल, अर्नेष्ट मैर्के, SR राव इनके अनुसार नदियों में आने वाली बाढ़ का अनुमान।
- अल्मानन्द घोष, डी पी अग्रवाल के अनुसार जलवायु परिवर्तन।

2 CHAPTER

उपनिवेशवाद और देहात

उपनिवेशवाद और देहात का अर्थ :-

- हम सभी जानते हैं कि उपनिवेश शब्द का अर्थ गुलामी और उपनिवेशवाद का अर्थ गुलाम बनाने वाली विचारधारा होता है।
- देहात शब्द को अक्सर गांव या ग्रामीण जीवन पद्धति व्यतीत करने वाले व्यक्तियों के संदर्भ में देखा जाता है अर्थात उपनिवेशवाद और देहात अर्थ औपनिवेशिक शासन का यानी अंग्रेजी शासन का भारतीय ग्रामीण जीवन क्या प्रभाव पड़ा।

प्लासी का युद्ध :-

1. प्लासी का युद्ध 23 जून 1757 को मुर्शिदाबाद के दक्षिण में 22 किलोमीटर दूर नदिया जिले में गंगा नदी के किनारे प्लासी नामक स्थान पर हुआ।
2. इस युद्ध में एक और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और दूसरी तरफ बंगाल कै नवाब सिराजुद्दौला की शाही सेना थी कंपनी की सेना ने रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में नवाब सिराजुद्दौला की शाही सेना को हरा दिया और पूरे बंगाल पर अपना कब्जा स्थापित किया इस प्रकार अंग्रेजों के अधीन आने वाला भारत का सबसे पहला क्षेत्र बंगाल बना।

कर व्यवस्था :-

- बंगाल पर विजयी होने के बाद अंग्रेज़ो ने कर (TAX) वसूलने की व्यवस्था बनाई।
- अंग्रेजों के समयकाल में मुख्य रूप से तीन प्रकार की कर व्यवस्था प्रचलित थी।

1. **इस्तमरारी बंदोबस्त (जमींदारी व्यवस्था, स्थाई बंदोबस्त) (1793) :-** बंगाल बिहार उड़ीसा उत्तर प्रदेश बनारस उत्तर कर्नाटक के लगभग भूभाग में के लगभग 19% भूभाग में स्थाई बंदोबस्त को लागू किया गया था।
2. **रैयतवाड़ी व्यवस्था (1792) :-** यह व्यवस्था असम मद्रास मुंबई के प्रांतों में लागू किया गया था। जो औपनिवेशिक भारत के भूमि का 51% भाग था।
3. **महालवाड़ी व्यवस्था (1822) :-** यह व्यवस्था उत्तर प्रदेश के मध्य प्रांत तथा पंजाब में लागू किया गया था। जो अपने औपनिवेशिक भारत की भूमि का 30% भाग था।

इस्तमरारी बंदोबस्त (जमींदारी व्यवस्था , स्थाई बंदोबस्त) :-

1. भारत में औपनिवेशिक शासन सर्वप्रथम बंगाल में स्थापित किया गया था। यही वह प्रांत था जहाँ पर सबसे पहले ग्रामीण समाज को पुनर्व्यस्थित करने और भूमि संबंधी अधिकारों की नई व्यवस्था तथा नई राजस्व प्रणाली स्थापित करने के प्रयास किए गए थे।
2. 1793 में इस्तमरारी बंदोबस्त बंगाल के राजाओं और ताल्लुकदारों के साथ लागू किया गया। उस समय कार्नवालिस गवर्नर जनरल था। इन्हें जमींदार कहा गया और उनका कार्य सदा के लिए एक निर्धारित कर का संग्रह किसानों से करना था। इसे सूर्यास्त विधि भी कहा जाता था।
3. ईस्ट इंडिया कम्पनी ने राजस्व की राशि निश्चित कर दी थी। जो प्रत्येक जमीदार को अदा करनी होती थी। जो जमीदार अपनी निश्चित राशि नही चुका पाते थे उनसे राजस्व वसूल करने के लिए उनकी सम्पदाये नीलाम कर दी जाती थी।
4. इस्तमरारी बंदोबस्त लागू किये जाने के बाद 75% से अधिक जमीदारिया हस्तांतरित कर दी गई।

इस्तमरारी बंदोबस्त को लागू करने के उद्देश्य :-

1. ब्रिटिश कंपनी ने अपनी कई उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बंगाल के नवाब राजाओं और तालुकदार के साथ इस्तमरारी बंदोबस्त व्यवस्था को लागू किया।
2. इसके अनुसार कंपनी को अस्थाई रूप से राजस्व की राशि नियमित रूप से प्राप्त कर सके।
3. बंगाल विजय के समय परेशानी को दूर करने के लिए।
4. 1770 में बंगाल की ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था दयनीय तथा संकट पुर्ण स्थिति का सामना कर रही थी।
5. अकाल की स्थिति की पूर्ण आवृत्ति होने के कारण कृषि नष्ट हो रही थी और व्यापार पतन की ओर अग्रसर हो रहा था।
6. कृषि निवेश के अभाव में क्षेत्र में राजस्व संसाधन का भाव हो गया था कृषि निवेश को प्रोत्साहन देने के लिए।
7. कंपनी की इस व्यवस्था में जमींदारों को भूस्वामी नहीं बल्कि कर संग्राहक बना दिया। कंपनी ने उन्हें अपना वफादार बनने का मौका दिया परंतु इस कंपनी ने धीरे-धीरे नियंत्रण कर शासन तथा कार्यप्रणाली को अपने अधीन कर सिमित कर दिया।
8. कम्पनी ने ऐसी व्यवस्था को बनाया कि उनके विशेष अधिकार, सैन्य अधिकारी, स्थानीय न्याय अधिकार तथा सीमा शुल्क अधिकारी समाप्त हो गए।

स्थाई बंदोबस्त से जमीदारों को लाभ :-

1. जमीदार भूमि के वास्तविक स्वामी बन गए और उनका यह अधिकार वंशानुगत बन गया।
2. जमीदार अंग्रेजों की जड़ें भारत में मजबूत करने में मदद करने लगे।
3. जमीदार जब जमीनों के मालिक बन गए तो वह कृषि में रुचि लेने लगे और भारत में उत्पादन में भारी वृद्धि हुई जिससे अंग्रेजों को राजस्व प्राप्त करने में और अधिक पैसा मिलने लगा जिसका लाभ भारतीय जमीदारों को भी हुआ।
4. कंपनी को प्रतिवर्ष निश्चित आय की प्राप्ति होने लगी।
5. बार – बार लगान की दरें निर्धारित करने का झंझट खत्म हो गया।
6. लगान वसूल करने के लिए कंपनी को अब अधिकारियों की आवश्यकता नहीं रही और धन स्वयं जमीदार इकट्ठा करके कंपनी तक पहुंचाने लगे।

स्थाई बंदोबस्त के किसानों पर बुरे प्रभाव :-

- किसानों को जमीदारों की दया पर छोड़ दिया गया।
- जमीदार किसानों का बेरहमी से शोषण करने लगे।
- किसानों का जमीन पर कोई हक नहीं रहा वह सिर्फ जमीन पर मजदूर बनकर रह गए।
- लगान की दरें बहुत अधिक थी जिससे वह दिनों दिन गरीब होते चले गए।
- किसानों के पास अपनी जमीन बचाने के लिए कोई कानूनी अधिकार नहीं रह गया।
- समाज में आर्थिक और सामाजिक शोषण बढ़ता गया जिसके कारण किसान गरीब व जमीदार धनवान बनते चले गए।

जमींदार ठीक समय पर राजस्व क्यों नहीं दे पाते थे ? एव उनकी जमीने क्यों नीलम कर दी जाती ?

उत्तर बंगाल में 1793 में इस्तमरारी बंदोबस्त लागू किया गया इस व्यवस्था को लागू करने के बाद बहुत सारी जमीदारियां नीलाम होने लगी इसके निम्नलिखित कारण थे :-

1. स्थाई बंदोबस्त में लगान की रकम बहुत ज्यादा थी और जो राजा लगान नहीं चुका पाता था उसकी संपत्तियों को नीलाम कर दिया जाता है।

2. जमीदारों ने भूमि सुधारों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जिससे वह भू स्वराज जमा करने में लापरवाही करते रहे इससे उनकी बकाया राशि बढ़ती गई। स्वराज को वसूल करने के लिए कंपनी के अधिकारी उनकी भूमि को नीलाम कर दिया करते थे।
3. राजस्व की दरें और मांगे बहुत रखी गई थी क्योंकि सरकार सोचती थी कि बाद में राजस्व की मांगों को बढ़ाया नहीं जा सकता था।
4. राजस्व की राशि तो एक समान रहती थी परंतु कई बार सूखा , अकाल पड़ने या अधिक वर्षा के कारण फसलें बर्बाद हो जाती थी परंतु राजस्व वैसा का वैसा ही बना रहता था। जिसे प्रतिकूल परिस्थितियों में चुकाना काफी कठिन हो जाता था।

जमींदारों की शक्तियों पर नियंत्रण :-

- जमीदारों की सैन्य टुकड़ियों को भंग कर दिया गया।
- सीमा शुल्क खत्म कर दिया गया जो जमीदार लगाया करते थे जिससे जमीदारों को लाभ हुआ करता था।
- उनकी कचहरीओ को कंपनियों द्वारा चयनित कलेक्टरों की देखरेख में रखा गया।
- स्थानीय पुलिस का अधिकार खत्म कर दिया गया जिसका प्रयोग करके जमीदार शासन व्यवस्था चलाते थे।
- कलेक्टर समय के साथ – साथ सभी प्रशासनिक कार्य करने लगे। यदि जमीदार एक बार अदा नहीं कर पाता था तो कलेक्टर तुरंत समन भेज दिया करता था।

ईस्ट इंडिया कंपनी के समय जमीदार की स्थिति :-

- 1793 के स्थाई बंदोबस्त के अनुसार जो जमीदार भूमिकर की निश्चित राशि नहीं जमा करवा सकता था उसकी भूमि नीलाम कर दी जाती थी।
- नीलामी करने की इस व्यवस्था से 75 % से अधिक जमीदारी अपनी जमीन गवा बैठे थे।
- इसके अनुसार जमीदारों को निश्चित भूमि कर जमा करवाना होता था इस प्रकार जमीदार भूमि कर इकट्ठा करने वाले ही बनकर रह गए।

जमीदारों की स्थिति में गिरावट के कारण ?

1. राजस्व की राशि बहुत अधिक थीं जमीदार इसे जमा नहीं करा पाते थे अतः उनकी जमीन नीलाम कर दी जाती थी जिससे उन्हें हानि उठानी पड़ती थी।
2. कृषि की उपज के भाव कम थे जिससे जमीदार किसानों से निर्धारित कर वसूल नहीं कर पाते थे।
3. फसल खराब होने पर भी राजस्व जमा करवाना पड़ता था जिससे जमीदारों को या तो घाटा उठाना पड़ता था या उनकी जमीन नीलाम कर दी जाती थी
4. किसानों से कर ना मिलने पर जमीदार मुकदमा करने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते थे और मुकदमा लंबा चलने से उन्हें घाटा होता था।

राजस्व राशि के भुगतान में जमीदार क्यों चूक जाया करते थे ?

- 1770 का आकाल।
- राजस्व की राशि की दरें भविष्य को ध्यान में रखकर 1793 में निर्धारित की गई थी जो कि बहुत ज्यादा थी।
- राजस्व की दरें स्थाई थी चाहे फसल खराब हो या ठीक हो उनको कभी बदला नहीं जा सकता था।
- लगान की दरें भविष्य को ध्यान में रखकर दर्ज की गई थी।
- राजस्व की दरें काफी ऊंची थी।

- राजस्व चुकाने के लिए समय बहुत पर्याप्त हुआ करता था इसके लिए सूर्य अस्त विधि का प्रयोग किया जाता था।
- कई स्थानों पर स्पष्ट नहीं था कि लगान कौन एकत्रित करेगा अर्थात तालुकदार जमीदार या कलेक्टर और कहीं – कहीं पर तीनों ने ही नहीं होते थे।
- अमीर किसान जमीदारों को लगाना देने के लिए उठाते थे छोटे किसानों को जिससे किसान लगान आगे ना दे पाए।

सूर्यास्त विधि :-

- इस विधि के अनुसार यदि जमींदार निश्चित तिथि में सूर्यास्त होने तक अपना राजस्व नहीं चुका पाते थे तो कर की कीमत दोगुनी कर दी जाती थी और कई स्थितियों में जमींदारों की संपत्ति को नीलम भी कर दिया जाता था।

तालुकदार :-

- तालुकदार दो शब्दों से मिलकर बना है पहला तालुका जिसका अर्थ होता है जिला और दार जिसका अर्थ होता है स्वामी इस प्रकार तालुकदार एक ऐसे व्यक्ति को कहते थे जिसका मुख्य कार्य 1 जिले से राजस्व एकत्रित करना होता था।

रैयत :-

- रैयत का अर्थ किसान होता है इस शब्द का प्रयोग अंग्रेज किया करते थे बंगाल के अंदर रैयत जमीन को खुद नहीं जोता करते थे बल्कि आगे भूमिहीन किसानों को पट्टे पर देकर के भूमिहीन किसानों से जूतवाया करते थे।

बर्दवान में की गई एक नीलामी की घटना :-

1. जैसा कि ब्रिटिश कंपनी के अनुसार स्त्रियों से संपत्ति नहीं ली जाती थी जिस कारण बर्दवान के राजा ने अपनी जमीन की कुछ हिस्सा अपनी माता जी का नाम कर दिया और राजस्व का भुगतान नहीं किया। फलस्वरूप राजस्व की रकम बढ़ गई कंपनी के द्वारा उनकी भूमि की नीलामी आरंभ कर दी गई तो जमींदार के अपने ही लोगों ने ऊंची बोली लगाकर खरीद ली।
2. बाद में कंपनी के अधिकारी को राशि देने से साफ इनकार कर दिया। विवश होकर अधिकारियों ने पुनः नीलामी की प्रक्रिया आरंभ कर दी जहां राजा के लोगों ने पुन : उक्त प्रक्रिया प्रारंभ कर दी और उनकी पुनरावृत्ति की अंततः जब बोली लगाने वाले थक गए तो उस भूमि को कम कीमत में बर्दमान के राजा को बेचने पड़े।
3. इस प्रकार 1793-1801 के बीच बंगाल की चार बड़े जमींदारों की नीलामी में से एक बर्दमान के भी जमीन थी जिसमें बहुत बेनामी खरीद हुई। जहां 95% से अधिक फर्जी बिक्री थी।

जमीदार अपनी संपत्ति को नीलाम होने से कैसे बचाते थे ?

1. फर्जी बिक्री के द्वारा जमीदारों अपनी जमीन को नीलाम होने से बचाते थे।
2. जमीदार अपनी जमीनों को घर की महिलाओं के नाम पर कर दिया करते थे क्योंकि औरतों की संपत्तियों को इस्तमरारी बंदोबस्त कानून के माध्यम से नीलाम नहीं किया जा सकता था।
3. जमीदार नीलामी एजेंटों के साथ मिलकर जोड़ – तोड़ कर लिया करते थे।
4. जमीदार नीलामी में अपने आदमियों से अन्य लोगों की तुलना में बहुत अधिक बोली लगाकर नीलामी को प्रभावित किया करते थे।
5. जमीदार अपनी नीलामी जमीन पर अन्य लोगों को कब्जा नहीं करने देते थे।
6. लटियाल वर्ग नए खरीदारों को मार मार कर भगा देते थे।
7. कई बार बाहरी लोगों को पुराने रैयत जमीदारों की संपत्तियों में घुसने नहीं दिया करते थे। 1790 के आरंभ मे जमीदारों की अच्छी हो चुकी थी।

पांचवी रिपोर्ट :-

1813 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने ब्रिटेन की संसद में पांचवी रिपोर्ट पेश की इसमें कुल 1002 पेज 800 से अधिक जमीदारों व किसानों की अर्जियां शामिल की गई कॅपनी ने 1760 के दशक के मध्य जब से बंगाल का प्रशासन संभाला तब से इंग्लैंड में उसके प्रत्येक क्रियाकलापों पर बारीकी से नजर रखने जाने लगी थी।

पांचवी रिपोर्ट की विशेषताएं :-

- भारत में कंपनी के एकाधिकार का इंग्लैंड में विरोध।
- इंग्लैंड के अन्य राजनीतिक दलों का हस्तक्षेप।
- निजी व्यापारियों का भारतीय बाजारों के प्रति आकर्षण।
- कंपनी पर कुप्रशासन व भ्रष्टाचार के आरोप।
- पांचवी रिपोर्ट कंपनी के शासन का इंग्लैंड में वाद – विवाद का आधार बनी।
- ब्रिटिश संसद ने कंपनी पर अंकुश लगाने के लिए 1773 में रेगुलेटिंग एक्ट पास किया संसद ने कंपनी को नियमित रूप से अपनी रिपोर्ट भेजने के लिए बाध्य किया।

पांचवी रिपोर्ट की आलोचना :-

- पांचवी रिपोर्ट एक ऐसी रिपोर्ट थी जिसने भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के बारे में ब्रिटिश संसद में गंभीर वाद विवाद को जन्म दिया।
- इस रिपोर्ट में बंगाल में कंपनी के शासन को उजागर किया गया तथा जमीदारों के पतन का वर्णन किया गया चाहे जमीदार नीलामी के समय अपने एजेंट द्वारा नए – नए हथकंडे अपनाकर अपनी जमीनी को बचा लेते थे लेकिन पांचवी रिपोर्ट से काफी विवाद उठ खड़ा हुआ।
- कंपनी के विरुद्ध ब्रिटेन के व्यापारियों के विरोध के दबाव से ब्रिटिश संसद ने कंपनी पर अपना नियंत्रण स्थापित करने का फैसला कर लिया।

रैयतवाड़ी व्यवस्था :-

1. इस व्यवस्था को 1792 में मद्रास प्रेसिडेंसी के बार-महल जिले सर्वप्रथम लागू किया गया था। इस व्यवस्था के प्रारंभ हो जाने के बाद संपूर्ण मद्रास में सन् 1820 ईस्वी में कैप्टन मुनरो द्वारा प्रयोग किया गया इसके अंतर्गत कंपनी तथा रैयतों के बीच सीधा संबंध था। राजस्व के निर्धारण में तथा लगान वसूल करने में किसी जमींदारों या बिचोलियों का भूमिका नही थी।
2. कैप्टन रिड एवं मुनरो द्वारा प्रत्येक किसान को भूमि का स्वामी माना गया। वह राजस्व सीधे कम्पनी को देगा। उसे अपने के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता था और कर (Tax) ना चुकाने पर उसे भूमि देना पड़ता था।
3. यह व्यवस्था की अवधी समाप्त होने पर लगान का निर्धारण फिर से होता था। परंतु व्यावहारिक रूप से देखने पर राजस्व के आकलन का आधार अनुमान था उपज के काम आने पर बढ़ी हुई राजस्व की रकम की मांग के कारण कभी-कभी किसान को लगाना अदा करने में मुश्किल होती थी। यह व्यवस्था 30 वर्ष तक चली थी जहां 1820ई० में इसे उन क्षेत्रों में लागू किया गया जहां कोई भू-सर्वेक्षण नहीं हुआ था।
4. रैयतों को इच्छा अनुसार खेत ना देकर कंपनी के अधिकारी उन्हें आने खेतों में काम करवाने लगे और भूमि कर भी बढ़ा दिया जिससे कृषक वर्ग अपनी भूमि साहूकार के पास में गिरवी रखकर ऋण लेते थे। जहां वे ऋणग्रस्ता के जाल में फंस जाते थे यदि किसान कर नहीं दे पाते थे तो उनकी भूमि छीन ली जाती थी तथा राजस्व वसूल करने के लिए कंपनी के अधिकारी रैयतों पर अत्याचार करते थे।

रैयतवाड़ी व्यवस्था का मद्रास में प्रभाव :-

- यह व्यवस्था कृषकों के लिए हानिकारक सिद्ध हुई।
- इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गिरावट आ गई।
- कृषक गरीब एवं ऋण ग्रस्त के जाल में फंस गए।
- इस व्यवस्था के कारण मद्रास में लगभग 1,80,00000 एकड़ जमीन परती रह गई।
- इस व्यवस्था के कारण कृषि की स्थिति में भी काफी गिरावट आ गई।

मुंबई में रैयतवाड़ी बंदोबस्त व्यवस्था :-

1. सन् 1819 से 1827 ई° तक मुंबई में गवर्नर एलफिंस्टन थे। जिन्होंने 1818 ई° में पेशवा के राज्यों को अपने अधीन कर लिया इसके बाद उन्होंने वहां रैयतवाड़ी बंदोबस्त लागू किया।
2. इसी समय 1824-28 तक पिंगल नामक अधिकारी ने भूमि का सर्वे किया तथा उन्होंने निश्चित किया कि भूमि की उपज 55% है क्योंकि यह सर्वेक्षण गलत होने के कारण उपज का आकलन ठीक नहीं बैठा। भूमि का कर निश्चित हो जाने के कारण बहुत से किसानों ने भूमि योजना बंद कर दिया जिससे काफी क्षेत्र बंजर हो गए।

महालवाड़ी व्यवस्था :-

- सन 1822 ई° में लोर्ड वेलेजली द्वारा उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रान्त मे लागू की गई थी। इस कर व्यवस्था के अनुसार जमींदार को निश्चित राजस्व देना पड़ता था एवं शेष अपने पास रखते थे।
- नोट :- महालवाड़ी,महाल एवं वाड़ी से मिलकर बना है जहाँ महाल का अर्थ है गाँव के प्रतिनिधि या जमींदार या जिनके पास अधिक भूमि थी।
- इस व्यवस्था के अंतर्गत राजस्व रकम जमा करने का काम मुकद्दम प्रधान, किसी बड़े रैयत को दिया जा सकता था। जो सरकार को राजस्व एकत्रित कर सम्पुर्ण भुमि का कर देते थे।

महालवाड़ी व्यवस्था के प्रभाव :-

- इस व्यवस्था के कारण ग्रामीण जमींदारों की स्थिति में गिरावट आ गई।
- कंपनी द्वारा राजस्व की जाल में फंस जाने के कारण राजस्व कि दर वह चुका नहीं पाए परिणाम स्वरूप कंपनी द्वारा उनकी भूमि छिन ली गई।
- राजस्व की रकम पूरा न करने के कारण जमींदार व किसान मजदूर बन गए।
- गरीबी अकाल एवं मंदी के समय किसानों व जमींदारों की स्थिति में गिरावट आने के कारण काफी रोष हो जाते हैं यही गुस्सा आगे चलकर 1857 के विद्रोह के रूप में उभर जाती है।

पहाड़ी लोगों :-

1. पहाड़ी लोग राजमहल की पहाड़ियों के आस – पास रहते थे राजमहल की पहाड़ियां वर्तमान पश्चिम बंगाल के अंदर मौजूद हैं बुकानन के अनुसार यह पहाड़ियां अभेदय प्रतीत होती थी और यात्री भी वहां जाने से डरते थे अन्य लोगों के प्रति उनका व्यवहोर शत्रुता पूर्ण था उनकी जीवन पद्धति निम्नलिखित प्रकार की थी
2. जंगल की उपज पर निर्भर करते थे और झूम खेती किया करते थे।
3. पहाड़ी लोग खाने के लिए जंगल से महुआ के फूल रेशम लाल काट कोयला बनाने के लिए लकड़ी इकट्ठा करते थे।
4. पेड़ों के नीचे छोटे – छोटे पौधे पर वह पशुओं की चारागाह के रूप में प्रयोग करते थे।
5. आभा काल के समय स्थानों पर हमला किया करते थे लोगों को शांति स्थापित कने के लिए खिराज दिया करते थे फिर आज एक टैक्स हुआ करता था जो पहाड़ी लोगों था।

6. भूमि को साफ करके झाड़ियों में आग लगाकर या उसकी राख को खाद के रूप में प्रयोग में लाते थे।
7. जैसे – जैसे जंगल खत्म होते गए और कृषि योग्य भूमि में वृदधि होती गई वैसे – वैसे इनका जीवन मुश्किल होता गया इनका इलीका छोटा होता गया और इनके जीवन पद्धति नष्ट होती गई।
8. खाने की फसलें दाल ज्वार बाजरा लेते थे जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए प्रति भूमि के रूप में कुछ समय खाली छोड़ दिया करते थे।

संथालों का आगमन :-

1. 18 वीं सदी के दशक में पहाड़िया लोगों के समक्ष नहीं समस्या उभर कर आई जो संथालों का आगमन था।
2. ये संथाल जमिन को जोत कर चावल तथा कपास उगाते थे।
3. जंगलों को काट कर इमारती लकड़ी निकालते थे।ये संथाल राजमहल के निचले क्षेत्रों पर आकर बस गए थे। इसलिए क्षेत्र में रहने वाले पहाड़िया लोग को और पीछे जाना पड़ा जैसा कि दोनों जन जातियां थी।
4. दोनों झूम खेती कृषि खेती करते थे लेकिन फर्क इतना था कि पहाड़िया लोग खेती के लिए कुदाल का प्रयोग करते थे जबकि संथाल लोग हल का प्रयोग करते थे। संथाल एवं पहाड़िया के बीच काफी दिन तक संघर्ष हुआ।

संथालों की बसावट :-

सर्वप्रथम कंपनी अधिकारियों का ध्यान संथालों की ओर गया जिसे उन्होंने राजमहल की पहाड़ियों पर जंगल साफ करने के लिए आमंत्रण दिया था। क्योंकि यह संथाल स्थाई कृषि करते थे तथा हल भी चलाते थे। कंपनी द्वारा सन 1832 ई० में राजमहल की पहाड़ियों के निचले भाग में बसने के लिए एक बड़ा क्षेत्र "दामिन ए कोह" दे दिया। इस जगह को संथालों का भूमि घोषित कर कथा सीमाओं की सीमांकित कर दिया गया।

संथाल विद्रोह :-

- जब सरकारी अधिकारियों जमींदारों व्यापारियों पर अत्याचार तथा शोषण किया गया जिसके विरोध में संथालों ने एक विद्रोह को आरंभ किया इसे ही संथाल विद्रोह की संज्ञा दी गई।
- यह विद्रोह 1855 से 1846 ई० में प्रारंभ हुआ जिनका नेतृत्व सिद्धु तथा कान्हू ने किया।
- इस विद्रोह के अंतर्गत सरकारों ने जमींदारों के समायोजन के घरों को लूटा खदानों को छीना सरकारी अधिकारियों ने इस विद्रोह को दबाने के लिए मारपीट करके उनका दमन प्रारंभ किया। जिससे विद्रोह करने वाले वैसे संथाल और अधिक उग्र हो गए।
- संथालों ने सिद्धू तथा कान्हू को ईश्वर के भेजे हुए दूत माना और उन्हें विश्वास था कि यह इनके शोषण से मुक्ति दिलाएंगे। संथाल अस्त्र-शस्त्र, तीर-कमान, भाला, कुल्हाड़ी आदि लेकर एकत्रित हुए और अंग्रेजों तथा जमींदारों से धमकी के साथ तीन मांग प्रस्तुत किए:
  1. उनका शोषण बंद किया जाए।
  2. उनकी जमीन वापस की जाए।
  3. उनको स्वतंत्र जीवन जीने दिया जाए।

कंपनी द्वारा इन चेतावनी पर ध्यान नहीं दिए जाने के कारण संथालों ने जमींदारों साहूकारों के विरोध में सशस्त्र विद्रोह आरम्भ कर दिये।

विद्रोह का दमन :-

- जब संथाल विद्रोह काफी तीव्र गति से फैला तब इस विद्रोह में निम्न वर्ग की गैर संथालियों ने संथाल के साथ मिलकर इस विद्रोह में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। परंतु ठीक इसके विपरीत कंपनी के पास आधुनिक हथियार अधिक होने के कारण उन्होंने इस विद्रोह को दबा दिया। इस विद्रोह के पश्चात संथाल को संतुष्ट करने के लिए अंग्रेज अधिकारी ने कुछ विशेष कानून लागू किया। संथाल परगना को पुनः निर्माण कराया जिसके अंतर्गत 5500 वर्ग मिल का क्षेत्र था। जिसमें भागलपुर तथा बीरभूम जिला का हिस्सा था।

फ्रांसिस बुकानन :-

- जैसा कि हम जानते हैं भारतीय विवरण के जितने भी महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं उसमें महत्वपूर्ण योगदान फ्रांसिस बुकानन का था। जो उस समय (1794-1815) की जानकारी देते हैं।
- फ्रांसिस बुकानन ना तो इतिहास-कार था ना ही सेवा अधिकारी फिर भी उसके विवरण तत्य्युगीन इतिहास के अच्छे स्रोत हैं। वे एक अच्छा चिकित्सक था। कुछ समय तक वह वेलेजली का शल्य चिकित्सक बन कर रहा। उसने कोलकाता में एक चिड़ियाघर स्थापित किया था जो बाद में अलीपुर चिड़ियाघर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कुछ समय के लिए वनस्पति विज्ञान का प्रभारी भी रहा।
- बाद में बंगाल सरकार के निवेदन पर कंपनी के क्षेत्राधिकारी वाली भूमि का सर्वे भी किया। 1805 में वह अस्वस्थ हो गया और वह ब्रिटेन वापस लौट आया। फ्रांसिस बुकानन अपनी मां की मृत्यु के बाद उनके संपत्ति के वारिस बने। उन्होंने अपनी मां की वंश का नाम हैमिल्टन को अपना लिया तथा फ्रांसिस बुकानन को बुकानन हैमिल्टन कहा जाता है।

दक्कन दंगा :-

- 12 मई 1875 ई० को पुणे जिले के सुपा नमक गांव में यह आंदोलन हुआ था इस विद्रोह में सुपा गांव के रैयत ने मिलकर साहूकारों के विरोध में अपना आक्रोश व्यक्त किया।
- किसानों द्वारा साहूकारों के लेखा खाता जला दिया गया उनके घर में आग लगा दी गई अनाज की दुकानें लूट ली गई।

दक्कन दंगा आयोग (1875) :-

- यह विद्रोह 1857 के विद्रोह की भांति थी। अतः ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों द्वारा मुंबई से सरकार पर मामले की जांच कराने का दबाव डाला गया। मुंबई सरकार ने जांच के लिए सन् 1875 ईस्वी में दक्कन में हुए विद्रोह के जांच के लिए एक आयोग गठित किया।
- जांच के बाद तैयारी की गई रिपोर्ट को 1875 में पार्लियामेंट भेजी गई। इस रिपोर्ट में रैयतों पर अत्याचार तथा उनमें असंतोष, रैयत वर्ग तथा ऋण दाताओं के बयान, भू राजस्व की कीमतों तथा जिला कलेक्टर द्वारा भेजी गई रिपोर्ट तथा रैयतों की याचिकाओं को संकलित किया गया है। जो इतिहास-कारों के लिए इस विद्रोह के बारे में विशेष जानकारी उपलब्ध कराता है।